तीव्र गति से बढ़ते शिष्य – रॉड(RAD)

स्वस्थ्य कलीसिया स्थापना हस्तपुस्तिका

Last Revised: June 2013

रॉड (पौलुस के नमूने) का गीत

कोरस

भरोसा करें और आज्ञा माने।
भरोसा करें और आज्ञा माने।
एक नया जीवन जीएं।
एक नया जीवन जीएं।
एक नया जीवन जीएं।
एक नया जीवन जीएं।

1

ज्योति मे चले हम ज्योति मे चलें
ज्योति मे चले हम ज्योति मे चलें।
एक दुसरे से प्रेम करें।
एक दुसरे से प्रेम करें।

2

प्रभु मे सदा दृढ बने रहें।
प्रभु मे सदा दृढ बने रहें।
उदारता के साथ दान दें।
उदारता के साथ दान दें।

3

प्रभु को याद रखने के लिये।
प्रभु को याद रखने के लिये।
प्रभु भोज को लिया करें।
प्रभु भोज को लिया करें।

Copyright © 2006-2013

विषय वस्तु

स्वस्थ कलीसिया स्थापना हेतु कदम 4
स्वस्थ कलीसिया स्थापना हेतु कदम – चित्र..... 5
एक स्वस्थ कलीसिया क्या है?..... 6
स्वस्थ कलीसिया को ढूढ़ना 7
सुसमाचार कैसे बाटें (2–3–4)..... 8
प्रथम कदम पाठ 1– अपने उद्धार के प्रति आश्वस्त रहें 9
प्रथम कदम पाठ 2– बपतिस्मा लें.....10
प्रथम कदम पाठ 3– जाएं और बताएं 11
प्रथम कलीसियाई सभा – भरोसा करें और आज्ञा मानें (अधिकार).....12
द्वितीय कलीसियाई सभा– एक नया जीवन जीएं (नींव).....13
तीसरा कलीसियाई सभा– ज्योति में चलें (सही जीवन जीना).....14
चौथी कलीसियाई सभा– एक दूसरे से प्रेम करें (सही धार्मिकता) 15
पॉचवी कलीसियाई सभा– प्रभु में दृढ़ बनें (सही सामना) 16
छठवीं कलीसियाई सभा– उदारता से दान दें (कलीसिया).....17
सातवीं कलीसियाई सभा– प्रभु भोज लें (कलीसिया).....18
दीर्घ कालीन शिश्यता निर्देश.....19
दीर्घ कालीन शिश्यता शास्त्र भाग का सेट 20
एपेन्डिक्स 1 – अतिरिक्त बपतिस्मा पाठ 1 22
एपेन्डिक्स 2 – अतिरिक्त बपतिस्मा पाठ 2 23
एपेन्डिक्स–बी कलीसिया रोपकों के लिए दान की शिक्षा.....24
एपेन्डिक्स–सी प्रभु–भोज.....26

स्वस्थ कलीसिया स्थापना हेतु कदम

1. काटनी करने वालों के लिए प्रार्थना करें (शांति का पुरूष बहुधा प्रथम काटने वाला होता है) और एक गांव या नगर जाएं जहां यीशु भेजता है। **लूका 10:1–3**
2. परमश्वर पर भरोसा रखें और मार्ग में समय बरबाद न करें – **लूका 10:4**
3. भरोसा करें कि परमेश्वर ने आपसे मिलने के लिए एक शांति के पुरूष को रखा है। **प्रेरित 17:26–27**
4. एक शांति के पुरूष को खोजें। उसके घर में प्रवेश करें, जो कुछ वह आपको दे उसे खाएं एवं पीएं (उसी घर में रहें और एक घर से दूसरे घर न जाएं!)–**लूका 10:5–8**
   ध्यान दें: जब कोई आपसे पूछे कि आप वहां क्या कर रहें हैं, तो कहें, "मैं प्रभु यीशु मसीह का अनुसरण करने वाला हूँ, और मैं यहां इस गांव को परमेश्वर की आशीष देने के लिए आया हूँ।"
5. जरूरत को पूरा करें और सुसमाचार सुनाएं। –**लूका 10:9**
   *(**पन्ने 8** पर दिए गए 2–3–4 तरीके के द्वारा सुसमाचार सुनाएं)*
6. जब एक व्यक्ति यीशु के पीछे चलने लगे, तो उस घर में कलीसिया आरम्भ कर दें, और जितनी जल्दी हो सके उन्हें 3 प्रथम कदम पाठों को सिखाएं।
   अ. अपने उद्धार के प्रति आश्वस्त रहें **(पन्ना 9)**
   ब. बपतिस्मा लें **(पन्ना 10)**
   स. जाओ और बताओ (पन्ना 11) स्थानीय विश्वासी ही कटनी काटने वाले हैं।
7. बपतिस्मा लिए विश्वासियों को समझा कर प्रभु भोज देना आरम्भ करें ।

8. सप्ताह में कम से कम एक बार जाएं और नई कलीसिया को शिश्य बनाएं और उसे स्वस्थ बनाएं (पौलुस के नमूने का उपयोग करें।)
   अ. प्रथम कलीसियाई सभा में सिखाएं **(पन्ना 12)**
   ब. दूसरे कलीसियाई सभा में सिखाएं **(पन्ना 13)**
   स. तीसरे कलीसियाई सभा में सिखाएं **(पन्ना 14)**
   ड. चौथी कलीसियाई सभा में सिखाएं **(पन्ना 15)**
   इ. पाँचवी कलीसियाई सभा में सिखाएं **(पन्ना 16)**
   फ. छठीं कलीसियाई सभा में सिखाएं **(पन्ना 17)**
   ज. सातवीं कलीसियाई सभा में सिखाएं **(पन्ना 18)**
9. कलीसिया शिश्यता के अगले कदम को शुरु करे और एक साथ सेवक रुपी अगुए नियुक्त करें। **(पन्ना 19–21)**
10. आज्ञाकारी विश्वासी ढूढें और उन्हें इस पूरी प्रक्रिया को सिखाएं ताकि वे दूसरों को भी सिखा सकें।

ध्यान दें:

- जैसे ही कलीसिया बढ़ें, तो यह सुनिश्चित करें कि कोई नए विश्वासियों को 3 प्रथम कदम पाठों एवं पौलुस के नमूने के 7 पाठों को सिखाए।
- एक बार में 6 से अधिक कलीसिया न स्थापित करें। आप को कम से कम प्रत्येक सप्ताह एक कलीसिया को जाकर देखना एवं शिश्यता सिखाना होगा, जब तक वे स्वस्थ न बन जाएं। यदि आपने 6 कलीसिया स्थापित की हैं, इसका अर्थ है कि 6 दिन का कार्य और एक दिन का सब्त विश्राम। जब एक कलीसिया स्वस्थ हो जाए, तो जाकर एक नई जगह में कलीसिया स्थापित करें।

स्वस्थ कलीसिया की स्थापना के लिए कदम– चित्र

यह चित्र आपको स्वस्थ कलीसिया की स्थापना हेतू कदमों का स्मरण रखने में सहायता करेगा।आप जब दूसरों को स्वस्थ कलीसिया स्थापना करने की शिक्षा दे तो आप इसे बना भी सकते हैं ताकि वे सिखें और इस प्रक्रिया को स्मरण रखें।

(10) आज्ञाकारी विश्वासी ढूढें और उन्हें इस पूरी प्रक्रिया को सिखाएं ताकि वे दूसरों को भी सिखा सकें

(9) शिष्यता का अगला कदम शुरु करें और अगुए नियुक्त करें (पन्ना 19–21)

(8g) प्रभु भोज लें (पन्ना 18)

(8f) उदारता के साथ दान दें (पन्ना 17)

(8e) प्रभु में दृढ़ बनें (पन्ना 16)

(8d) एक दूसरे से प्रेम करें (पन्ना 15)

(8c) ज्योति में चलें (पन्ना 14)

(8b) नया जीवन जीएं (पन्ना 13)

(8a) भरोसा करें और आज्ञा मानें (पन्ना 12)

(7) बपतिसमा लिए हुए विश्वसियों को शिखाकर प्रभु भोज देना शुरू करें

(6) कलीसिया शुरू करें और 3 पहला कदम पाठ सिखाएं
- (a) अपने उद्धार के प्रति आश्वस्त रहे (पन्ना 9)
- (b) बपतिस्मा लें (पन्ना 10)
- (c) जाएं और बताए (पन्ना 11)

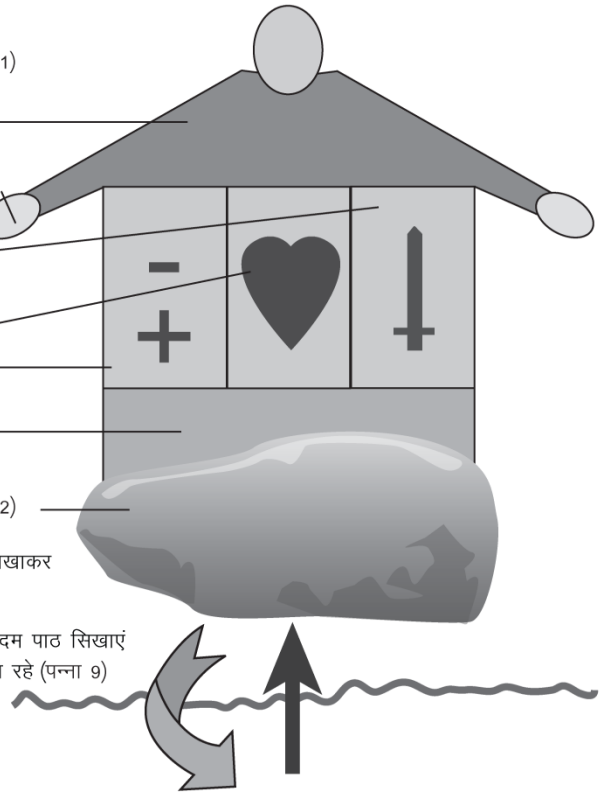

(5) आवश्यकता पूरा करें और सुसमाचार सुनाएं (पन्ना 8)

(4) घर में प्रवेश करें (पन्ना 4)

(3) परमेश्वर ने शांति के पुत्र को नियुक्त किया है (पन्ना 4)

(2) परमेश्वर पर आश्रित हों (पन्ना 4)

(1) काटनी करने वालों के लिए प्रार्थना करें और जाएं (पन्ना 4)

एक स्वस्थ कलीसिया क्या है?

एक स्वस्थ कलीसिया ...

1. का केवल एक उद्देश्य है।
   अ .कि सच्चे परमेश्वर के बारे बताएं और उसकी महिमा के बारे बताएं– **(हब 2:14)**
2. के पास अधिकार के 2 श्रोत है।
   अ. प्रभु यीशु मसीह –परमेश्वर– **(कुलु 1:18–19**)
   ब. परमेश्वर का वचन– **(2 तिमु 3:16–17)**
3. के पास तीन तरह के अगुवे हैं।
   अ. प्राचिन/पास्टर/चरवाहे– **(1 तिमु 3:1–7)**
   ब. सेवक अगुवे/डीकन– **(प्रेरित 6, 1तिमु 3:8–13)**
   स. खजांची– विश्वासयोग्य सेवक अगुवा जो दान को संभाले।
4. के पास स्वस्थता का 4 चिन्ह है। एक स्वस्थ कलीसिया...
   अ. स्वयं का अर्थिक तौर पर बोझ उठा पाएगी।
   ब .के पास अपने अगुवे होंगे और स्वयं संचालन का अधिकार।
   स. जाकर बढेंगी और अन्य स्वस्थ कलीसियाओं को बनाएंगी।
   ड. अपने को तथा एक दूसरे को परमेश्वर के वचन द्वारा सुधारेगी।
5. 5 कार्य करती हैं जिन्हें परमेश्वर ने स्वयं को प्रकट करने एवं अपनी महिमा प्रकट करने के लिए दी है।
   अ. आराधना–परमेश्वर से प्रेम – **(मत्ती 22:36–38)**
   ब. सेवा–एक दूसरे से प्रेम करना एवं अधिकार को मानना – **(मत्ती 22:39, प्रेरित 2:42–47)**
   स. संगति– एक दूसरे से प्रेम – **(मत्ती 22:39, प्रेरित 2:42–47)**
   ड. सुसमाचार प्रचार–जाओ और सुसमाचार सुनाओ – **(मत्ती 28:18–19)**
   इ. शिश्यता– आज्ञाकारिता के लिए शिक्षा – **(मत्ती 28:19–20)**

*जब भी आप **पृष्ठ 4 एवं 5** में दिए कदमों का पालन स्वस्थ कलीसिया की स्थापना के लिए करेंगे तो आपके पास कोई तरीका होना चाहिए जिससे आप जान पाएं कि वे कब स्वस्थ हो गए हैं। जबकि लक्ष्य यह है कि आप उस घर में तब तक रहें जब तक कि कलीसिया स्वस्थ न हो जाए, तो आपको निम्नलिखित चित्र को बनाना होगा और जैसे–जैसे कलीसिया स्वस्थ होती जाएगी उसे भरना होगा। जब चित्र समाप्त हो जाए, तो कलीसिया को बढ़ने वाली और स्वस्थ हो जाना चाहिए।*

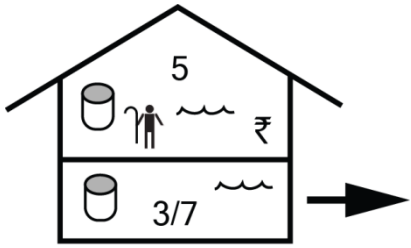

स्वस्थ कलीसिया की जांच

यहां वे कदम हैं जिससे आप अपनी कलीसिया को जांच सकते हैं और यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि वे स्वस्थ हैं:

1. एक नए स्थान पर कलीसिया शुरू करने के बाद (पृष्ट 4 पर कदम 6 देखें), आपको उस कलीसिया के स्वास्थ्य को जांचना शुरू करना चाहिए। निम्न दिए चित्र को एक सफेद कागज पर बनाएं या एक स्वस्थ कलीसिया जांच पन्ना का उपयोग करें। घर के नीचे गांव या जगह का नाम लिख दें।

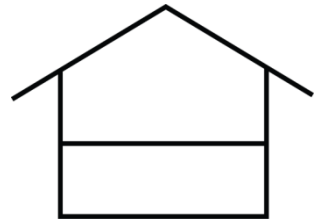

स्थान का नाम

2. आपने जब प्रथम विश्वासियों को प्रथम कदम पाठ को सिखा दिया है तो आप इस चिन्ह **(3/)** को घर के जमीनी तल पर बना सकते हैं।
3. जब आपने प्रथम व्यक्ति को बपतिस्मा दे दिया तो इस चिन्ह( ) को घर के जमीनी तल पर बना सकते हैं
4. जब आपने बपतिस्मा पाए लोगों को प्रभु भोज देना आरम्भ कर दिया तो इस चिन्ह को ( ) घर के जमीनी तल पर बना सकते हैं।
5. पौलुस के नमूने के 7 पाठों को नई कलीसिया को सिखाने के बाद इस चिन्ह (**7**) घर के जमीनी तल पर बनाएं।
6. कलीसिया में अगुवों को नियुक्त करने के पश्चात, इस चिन्ह ( ) घर के उपरी तल पर बनाएं।
7. जब कलीसिया के सदस्य और /या अगुवे दूसरों को बपतिस्मा देना प्रारम्भ करें तो घर के उपरी तल पर यह चिन्ह ( ) बनाएं
8. जब कलीसिया के सदस्य और /या अगुवे बपतिस्मा लिए विश्वासियो को प्रभु भोज देना प्रारम्भ करें तो घर के उपरी तल पर यह चिन्ह ( ) बनाएं।
9. जब कलीसिया एक खजांची को नियुक्त कर ले और वे प्रति सप्ताह दसमांस एवं दान को एकत्र करें, तो इस चिन्ह (₹)को उपरी तल पर बनाएं।
10. जब कलीसिया परमेश्वर द्वारा दिए गए 5 कार्यों को स्वस्थ कलीसिया के लिए कर रही है, तो इस चिन्ह (**5**)को उपरी तल पर बनाएं।
11. जब कलीसिया जाकर अन्य स्थानों में स्वस्थ कलीसिया बनाने लगे तो कलीसिया के बाहर इस चिन्ह (→)को बनाएं।

कैसे सुसमाचार बांटें (2–3–4)

परमेश्वर क्या चाहता है? – 2 पतरस 3:9, रोमियों 10:13–15
हमें क्या बताना चाहिए? – 1 कुरि 2:1–5, 1 कुरि 1:17, 1 थिस्स 2:1–10
हमें क्या कहना चाहिए? – 2–3–4 के उपयोग से सुसमाचार बांटें।

2. 2 का अर्थ है कि सुसमाचार के 2 भाग हैं – आपकी कहानी एवं यीशु की कहानी।

3. 3 का अर्थ है आपकी कहानी के 3 भाग हैं।

- मसीह से पूर्व आपका जीवन
- कैसे आपने मसीह को पाया
- मसीह के बाद आपका जीवन

4. 4 का अर्थ है यीशु की कहानी के 4 भाग हैं।

- न्याय – रो 2:16, इब्रा 9:27, रो 3:23, 6:23
- पश्चाताप – मरकूस 1:15, प्रेरित 2:37–38, 2 पतरस 3:9
- क्रूस पर मृत्यु – 1 यहू 2:1–2, रो 5:6,8, यहू 3:16
- पुनरूत्थान – रो 6:23, 1 पतरस 1:3–4, 2 कुरि 5:17

उनसे पूछें कि क्या वे यीशु के पीछे चलना चाहते और महान उद्धार पाना चाहते हैं।

यदि वे ग्रहण करना चाहते हैं तो रोमियो 10:9 के उपयोग द्वारा निम्न बातें बताएं:

1. परमेश्वर के सामने उन्हे अपने पापों से पश्चाताप करना होगा।
2. उन्हें केवल यीशु के पीछे चलने का समर्पण करना होगा (ग्रहण करना कि यीशु ही प्रभु है)।
3. उन्हें अपने ह्रदय में यह विश्वास करना होगा कि यीशु मृत्कों में से जी उठा (कि यीशु उनके पापों के लिए मरा और नए जीवन के लिए जी उठा ताकि वे भी अभी और हमेशा के लिए नए जीवन को पाएं)।

मसीह को जब वे स्वीकार कर लें...

उन्हें एक बाइबल दें: उन्हें पढ़ने या सुनने के लिए एक बाइबल दें।

प्रतिदिन पठन भाग उन्हें दें:
उन्हें बताएं कि वे प्रतिदिन कम से कम बाइबल के 3 अध्याय को पढ़ें और वे परमेश्वर के आज्ञाओं के प्रति आज्ञाकारी रहें।

प्रथम कदम पाठ 1– अपने उद्धार के प्रति आश्वस्त रहें

ध्यान दें: जितना जल्दी संभव हो नए विश्वासी को प्रथम तीन कदम पाठों को सिखाने की कोशिश करें। ये तीनों एक दिन में ही सिखाए जा सकते हैं। जिस दिन उन्होंने यीशु को ग्रहण किया है। या फिर तीन अलग अलग दिन में। लक्ष्य यह है कि वे जल्दी से जल्दी बाइबल की इन सच्चाईयों को सीखें और इसके प्रति आज्ञाकारी रहें।

प्रार्थना करें: नए विश्वासियों के साथ अपने समय की भारूआत प्रार्थना के साथ करें। परमेश्वर को धन्यवाद दें कि इस व्यक्ति ने यीशु को ग्रहण करने एवं उद्धार को ग्रहण करने का निर्णय किया है।

नई शिक्षा:

1.भाग लेने वाला बाइबल अध्ययन चलाएं

पढ़ें या सुनें: इफि 1:13–14, एवं यहू 10:27–30, लूका 3:15–17

प्रत्येक अनुच्छेद से 4 अध्ययन प्रश्न पूछें और उन्हें उत्तर देने की कोशिश करने दें।

1. यह आपको क्या सिखाता है?
2. आपको क्या नहीं करना चाहिए?
3. आप कैसे सही हो सकते हैं?
4. आप कैसे आज्ञा मानेंगे?

आदेश को बोलें:

अब जबकि आपने केवल यीशु के पीछे चलना स्वीकार कर लिया है, **तो अपने उद्धार के प्रति आश्वस्त रहें।** यीशु सर्वोच्च महान परमेश्वर है और किसी अन्य ईश्वर से कहीं सामर्थी है। आपको कोई भी यीशु के हाथ से ले नहीं सकता। और पवित्र आत्मा आपके ह्रदय में आया है और आपको हमेशा के लिए उद्धार पाए के रूप में चिन्हित कर दिया है। अतः, आपको आनन्द मनाना चाहिए और अपने **उद्धार को लेकर आश्वस्त रहना चाहिए।**

बताएं:

सारे संसार में प्रत्येक लोग जिन्होंने यीशु को ग्रहण करने का निर्णय लिया है उनके ह्रदय में परमेश्वर का आत्मा दिया गया है। इसके कारण, सभी जो यीशु के पीछे चल रहें हैं वे एक शरीर हैं और यीशु सिर है। जब यीशु के मानने वाले मिलते हैं तो वे हमेशा आराधना करते और परमेवर की आज्ञा को मानते हैं, इसे ही कलीसिया कहा जाता है। आप अब कलीसिया का एक भाग हैं, और आपको अब यीशु के अन्य मानने वालों के साथ बराबर मिलना चाहिए।

प्रार्थना करें:

प्रार्थना के साथ प्रथम कदम पाठ संख्या 1 को समाप्त करें। परमेश्वर को अदभुत दान उसके पवित्र आत्मा एवं अनन्त जीवन के लिए धन्यवाद दें।

प्रथम कदम पाठ 2– बपतिस्मा लें

प्रार्थना करें: नए विश्वासियों या विश्वासियों के साथ अपने समय की शुरूआत प्रार्थना के साथ करें। परमेश्वर को धन्यवाद दें कि इस व्यक्ति ने पवित्र आत्मा पा लिया है और यीशु के पीछे चलना जारी रखेगा।

नई शिक्षा:

1.भाग ले सकने वाले बाइबल अध्ययन को करें

पढ़ें या सुनें: लूका 3:15–17, प्रेरित 8:26–39, एवं प्रेरित 22:16

प्रत्येक अनुच्छेद से 4 अध्ययन प्रश्न पूछें और उन्हें उत्तर देने की कोशिश करने दें।

1.यह आपको क्या सिखाता है?

2.आपको क्या नहीं करना चाहिए?

3. आप कैसे सही हो सकते हैं?

4.आप कैसे आज्ञा मानेंगे?

आदेश को बोलें:

आप सीख चुकें हैं कि आपका उद्धार निश्चित है क्योंकि परमेश्वर ने आपके ह्रदय के अंदर अपने पवित्र आत्मा को दिया है। जबकि परमेश्वर पहले ही आपको अंदर से पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दे चुका है, आप साफ हो गए हैं। बहरहाल, यह दर्शाने के लिए कि आप सचमुच प्रभु यीशु मसीह के पीछे चलना चाहते हैं और यह चाहते है कि अन्य लोग जाने कि यीशु ही आपका प्रभु है, तो उसने आपको आज्ञा दिया है कि आप पानी में **बपतिस्मा लें**। आपने पहले कहा कि आप यीशु के पीछे चलना चाहते हैं, तो आप क्या करेंगे? जैसा आपने आज अध्ययन किया, आप क्यों देर करना चाहते हैं? उठे और **बपतिस्मा लें**!

कार्य: यदि वे **बपतिस्मा लेने** के लिए तैयार हैं, तो जितनी जल्दी हो यह करें (बाइबल का सिद्धान्त है तुरन्त)। *ध्यान रखें: यदि एक से अधिक व्यक्ति या घराना बपतिस्मा के लिए तैयार है तो आप, कलीसिया स्थापक सभी को बपतिस्मा न दें। इसके बजाए आपको पौलुस के उदाहरण का पालन करना चाहिए (1कुरि 1:14–17) और स्थानीय विश्वासी ही नए विश्वासियों को बपतिस्मा दें।*

प्रार्थना करें: प्रथम कदम पाठ संख्या 2 को प्रार्थना के साथ समाप्त करें। जल में बपतिस्मा के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें, जो पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का चिन्ह है और जिसके द्वारा आप प्रभु यीशु के लिए अपने भरोसे एवं आज्ञाकारिता को दर्शा सकते हैं।

ध्यान दें: *यदि व्यक्ति यीशु मसीह के पीछे अपने समर्पण के चिन्ह हेतू बपतिस्मा न ले तो फिर इस व्यक्ति से मिलें और इस हस्तपूस्तिका के अंत में दिए गए अतिरिक्त बपतिस्मा पाठों को आरम्भ करें।– **(अपेन्डिक्स ए– पृष्ठ 22–23)**।*

प्रथम कदम पाठ 3– जाओ और बताओ

प्रार्थना करें: नए विश्वासियों या विश्वासियों के साथ अपने समय की शुरूआत प्रार्थना के साथ करें। परमेश्वर को धन्यवाद दें कि उद्धार सभी स्थानों पर सभी लोगों के लिए उपलब्ध है।

नई शिक्षा:

1.भाग ले सकने वाले बाइबल अध्ययन को करें

पढ़ें या सुनें: मत्ती 28:18–20

प्रत्येक अनुच्छेद से 4 अध्ययन प्रश्न पूछें और उन्हें उत्तर देने की कोशिश करने दें।

1.यह आपको क्या सिखाता है?

2.आपको क्या नहीं करना चाहिए?

3. आप कैसे सही हो सकते हैं?

4.आप कैसे आज्ञा मानेंगे?

2–3–4 सिखाएं (सुसमाचार ही शुभ संदेश है)

2–3–4 की व्याख्या के द्वारा जो पृष्ट 8 पर है उन्हें 2–3–4 सिखाएं। स्मरण रखें कि शिक्षा देना यह कहने से अधिक है कि उन्हें क्या करना है, उन्हें अभ्यास करना आवश्यक है। अतः, जब आप 2–3–4 समझा चुकें, तो उन्हें निम्न कार्य करने दें:

1. **3 भागों को अभ्यास करें:** यदि आप एक बार में एक से अधिक व्यक्ति को शिक्षा दे रहें हैं तो उनसे कहें कि वे एक दूसरे से अपनी कहानी बताएं और आप उन्हें सुनें। उन्हें तब तक अभ्यास करने दें जब तक वे अपनी कहानी अन्यों को आसानी से न बता सकें। ध्यान दें कि वे अपनी कहानी में यीशु के बारे शुभ संदेश को भाामिल करें!
2. **यीशु की कहानी के 4 भागों का अभ्यास करें:** यीशु की कहानी में इस्तेमाल प्रत्येक बाइबल अनुच्छेद को उन्हें पढ़ने या सुनने दें। तब उन्हें एक दूसरे को या आपको यीशु की कहानी तब तक कहने दें जब तक वे आसानी से दूसरों को बता न पाएं।

आदेश कहें:

यीशु की आज्ञा मानें और जिनसे भी आप मिलें उन्हें शुभ संदेश सुनाएं ताकि वे भी परमेश्वर के मुफ्त दान उद्धार को पा सकें और न्याय से बच जाएं।

कार्य:

उन्हें 5 लोगों के नाम को सोचने या सूची बनाने को कहें जिन्हें वे इस सप्ताह जाकर बताएगें। उन्हें कहें कि प्रत्येक बार जब कलीसिया मिलती है, तो वे हमेशा एक दूसरे से पूछें कि उन्होंने किसे सुसमाचार सुनाया है।

प्रार्थना करें:

प्रथम कदम पाठ संख्या 3 को प्रार्थना के साथ समाप्त करें। परमेश्वर को उद्धार के शुभ संदेश और यीशु मसीह में अनन्त जीवन के लिए धन्यवाद दें।

प्रथम कलीसियाई सभा– भरोसा करें और आज्ञा मानें (अधिकार)

पौलुस का नमूना पाठ 1

प्रार्थनाः सभा की शुरूआत प्रार्थना के साथ करें। जब आप और/या अन्य प्रार्थना कर चुके तो अगले कदम पर जाएं।

स्तुतिः परमेश्वर के लिए स्तुति के गीतों को गाएं और आराधना करें।

जवाबदेहीः 4 जवाबदेही प्रश्नों को पूछें:

1. पिछले बार हमारे मिलने के बाद आपने किसे सुसमाचार सुनाया?
2. क्या आपने प्रति दिन बाइबल को पढ़ा/सुना?
3. पिछले बार आपने जो सिखा उसे आपने कैसे पालन किया?
4. प्रार्थना निवेदन/गवाही (ध्यान दें: यदि कोई कलीसिया को एक समस्या के बारे में बताए, तो उन्हें तुरन्त ही उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करना चाहिए)।

नई शिक्षाः

1.भाग ले सकने वाले बाइबल अध्ययन को करें

पढ़ें या सुनें: यशायाह 26:4 एवं मत्ती 7:24–29

प्रत्येक अनुच्छेद से 4 अध्ययन प्रश्न पूछें और उन्हें उत्तर देने की कोशिश करने दें।

1.यह आपको क्या सिखाता है?
2.आपको क्या नहीं करना चाहिए?
3. आप कैसे सही हो सकते हैं?
4.आप कैसे आज्ञा मानेंगे?

2. याद करें

याद करें: 2 तिमु 3:16

4 अध्ययन प्रश्नों को इस अनुच्छेद से पूछें।

आदेश कहें:

प्रभु पर एवं उसके वचन पर **भरोसा करें और आज्ञा** मानें।

सुसमाचार दें: यीशु की कहानी के चार भाग को बताएं।

अंतिम प्रार्थनाः सभा को प्रार्थना के साथ समाप्त करें और देह को आदेश दें कि वे यीशु के प्रति आज्ञाकारी बनें रहें, कि वे जाएं और सुसमाचार सुनाएं, और जो कुछ उन्होंने सीखा है उसे अभ्यास करें।

द्वितीय कलीसियाई सभा– एक नया जीवन जीएं (नींव)

पौलुस का नमूना पाठ 2

प्रार्थना करें: सभा की शुरूआत प्रार्थना से करें। जब आप और/अन्य प्रार्थना कर चुकें तो अगले कदम पर जाएं।

स्तुति: परमेश्वर के लिए स्तुति के गीतों को गाएं और आराधना करें।

जवाबदेही: 4 जवाबदेही प्रश्नों को पूछें:

1. पिछले बार हमारे मिलने के बाद आपने किसे सुसमाचार सुनाया?
2. क्या आपने प्रति दिन बाइबल को पढ़ा/सुना?
3. पिछले बार आपने जो सिखा उसे आपने कैसे पालन किया?
4. प्रार्थना निवेदन/गवाही (ध्यान दें: यदि कोई कलीसिया को एक समस्या के बारे में बताए, तो उन्हें तुरन्त ही उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करना चाहिए)।

नई शिक्षा:

1.भाग ले सकने वाले बाइबल अध्ययन को करें

पढ़ें या सुनें: मत्ती 6:5–15

प्रत्येक अनुच्छेद से 4 अध्ययन प्रश्न पूछें और उन्हें उत्तर देने की कोशिश करने दें।

1.यह आपको क्या सिखाता है?
2.आपको क्या नहीं करना चाहिए?
3. आप कैसे सही हो सकते हैं?
4.आप कैसे आज्ञा मानेंगे?

2.याद करें

याद करें: कुलु 1:10

इस अनुच्छेद से 4 अध्ययन प्रश्नों को पूछें।

कार्य करें: आप को नया जीवन दिया गया हैं, इस लिय नया जीवन बितायें। कैसे? प्रति दिन परमेश्वर के वचनो में बने रहने के द्वारा, परमेश्वर को स्तुति प्रार्थना देने के द्वारा, परमेश्वर के लोगो के साथ संगती रखने के द्वारा, आस–पास के लोगो को सुसामाचार सुनाने के द्वारा, आप का नमुना सेवा और क्लेश में यीशु के जैसा हो।

आदेश को कहें:

प्रभु के योग्य और प्रभु को हर तरह से प्रसन्न करते हुए **नया जीवन बिताएं।**

सुसमाचार दें: यीशु की कहानी के 4 भागों को बताएं।

समापन प्रार्थना : सभा को प्रार्थना के साथ एवं देह को आज्ञा मानने एवं अभ्यास करने के आदेश के साथ समाप्त करें जो उन्होंने सीखा है और उन्हें स्मरण दिलाएं कि वे जाएं और जिन्हें वे जानते हैं या जिनसे वे गांव में मिलते हैं उन्हें बताएं।

तीसरा कलीसियाई सभा– ज्योति में चलें (सही जीना)

पौलुस का नमूना पाठ 3

प्रार्थना करें: सभा की शुरूआत प्रार्थना से करें। जब आप और/अन्य प्रार्थना कर चुकें तो अगले कदम पर जाएं।

स्तुतिः परमेश्वर के लिए स्तुति के गीतों को गाएं और आराधना करें।

जवाबदेहीः 4 जवाबदेही प्रश्नों को पूछें:

1. पिछले बार हमारे मिलने के बाद आपने किसे सुसमाचार सुनाया?
2. क्या आपने प्रति दिन बाइबल को पढ़ा/सुना?
3. पिछले बार आपने जो सिखा उसे आपने कैसे पालन किया?
4. प्रार्थना निवेदन/गवाही – ध्यान दें: यदि कोई कलीसिया को एक समस्या के बारे में बताए, तो उन्हें तुरन्त ही उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करना चाहिए।

नई शिक्षाः

1.भाग ले सकने वाले बाइबल अध्ययन को करें

पढ़ें या सुनें:

उतारें– कुलु 3:5 कुलु 3: 8–9

पहनें– कुलु 3:12–14

प्रत्येक अनुच्छेद से 4 अध्ययन प्रश्न पूछें और उन्हें उत्तर देने की कोशिश करने दें।

1.यह आपको क्या सिखाता है?

2.आपको क्या नहीं करना चाहिए?

3. आप कैसे सही हो सकते हैं?

4.आप कैसे आज्ञा मानेंगे?

2. याद करें

याद करें: इफि 5:8

इस अनुच्छेद से 4 अध्ययन प्रश्नों को पूछें

आदेश कहें:

बुराई को उतारें और भलाई को पहनें। **ज्योति में चलें!**

सुसमाचार प्रदान करें: यीशु की कहानी के चार भागों को बताएं।

समापन प्रार्थना : सभा को प्रार्थना के साथ एवं देह को आज्ञा मानने एवं अभ्यास करने के आदेश के साथ समाप्त करें जो उन्होंने सीखा है और उन्हें स्मरण दिलाएं कि वे जाएं और जिन्हें वे जानते हैं या जिनसे वे गांव में मिलते हैं उन्हें बताएं।

चौथा कलीसियाई सभा– एक दूसरे से प्रेम करें (सही संबंध)

पौलुस का नमूना पाठ 4

प्रार्थना करें: सभा की शुरूआत प्रार्थना से करें। जब आप और/अन्य प्रार्थना कर चुकें तो अगले कदम पर जाएं।

स्तुतिः परमेश्वर के लिए स्तुति के गीतों को गाएं और आराधना करें।

जवाबदेहीः 4 जवाबदेही प्रश्नों को पूछें:

1. पिछले बार हमारे मिलने के बाद आपने किसे सुसमाचार सुनाया?
2. क्या आपने प्रति दिन बाइबल को पढ़ा/सुना?
3. पिछले बार आपने जो सिखा उसे आपने कैसे पालन किया?
4. प्रार्थना निवेदन/गवाही – ध्यान दें: यदि कोई, कलीसिया को एक समस्या के बारे में बताए, तो उन्हें तुरन्त ही उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करना चाहिए।

नई शिक्षाः

1.भाग ले सकने वाले बाइबल अध्ययन को करें

पढ़ें या सुनें: कुलु 3:14–4:6, 1 पतरस 2:14

प्रत्येक अनुच्छेद से 4 अध्ययन प्रश्न पूछें और उन्हें उत्तर देने की कोशिश करने दें।

1.यह आपको क्या सिखाता है?
2.आपको क्या नहीं करना चाहिए?
3. आप कैसे सही हो सकते हैं?
4.आप कैसे आज्ञा मानेंगे?

2. याद करें

याद करें: इफि 5:21

इस अनुच्छेद से 4 अध्ययन प्रश्नों को पूछें

आदेश कहें:

एक दूसरे से प्रेम करें और उनके अधिकार सौंपें।

सुसमाचार प्रदान करें: यीशु की कहानी के चार भागों को बताएं।

समापन प्रार्थना : सभा को प्रार्थना के साथ एवं देह को आज्ञा मानने एवं अभ्यास करने के आदेश के साथ समाप्त करें जो उन्होंने सीखा है और उन्हें स्मरण दिलाएं कि वे जाएं और जिन्हें वे जानते हैं या जिनसे वे गांव में मिलते हैं उन्हें बताएं।

पांचवीं कलीसियाई सभा– प्रभु में दृढ़ बनें (सही सामना करना)

पौलुस का नमूना पाठ 5

प्रार्थना करें: सभा की शुरूआत प्रार्थना से करें। जब आप और/अन्य प्रार्थना कर चुकें तो अगले कदम पर जाएं।

स्तुतिः परमेश्वर के लिए स्तुति के गीतों को गाएं और आराधना करें।

जवाबदेहीः 4 जवाबदेही प्रश्नों को पूछें:

1. पिछले बार हमारे मिलने के बाद आपने किसे सुसमाचार सुनाया?
2. क्या आपने प्रति दिन बाइबल को पढ़ा/सुना?
3. पिछले बार आपने जो सिखा उसे आपने कैसे पालन किया?
4. प्रार्थना निवेदन/गवाही (ध्यान दें: यदि कोई, कलीसिया को एक समस्या के बारे में बताए, तो उन्हें तुरन्त ही उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करना चाहिए।)

नई शिक्षाः

1.भाग ले सकने वाले बाइबल अध्ययन को करें

पढ़ें या सुनें: इफि 6:10–17

प्रत्येक अनुच्छेद से 4 अध्ययन प्रश्न पूछें और उन्हें उत्तर देने की कोशिश करने दें।

1. यह आपको क्या सिखाता है?
2. आपको क्या नहीं करना चाहिए?
3. आप कैसे सही हो सकते हैं?
4. आप कैसे आज्ञा मानेंगे?

इस पाठ के लिए हाथ से इशारा करें।

2. याद करें

याद करें: याकुव 4:7

इस अनुच्छेद से 4 अध्ययन प्रश्नों को पूछें

आदेश कहें

दृढ़ बनों और परीक्षा का सामना करो।

सुसमाचार प्रदान करें: यीशु की कहानी के चार भागों को बताएं।

समापन प्रार्थना : सभा को प्रार्थना के साथ एवं देह को आज्ञा मानने एवं अभ्यास करने के आदेश के साथ समाप्त करें जो उन्होंने सीखा है और उन्हें स्मरण दिलाएं कि वे जाएं और जिन्हें वे जानते हैं या जिनसे वे गांव में मिलते हैं उन्हें बताएं।

छठी कलीसियाई सभा– उदारता के साथ दान दें (कलीसिया)
पौलुस का नमूना पाठ 6

प्रार्थना करें: सभा की शुरूआत प्रार्थना से करें। जब आप और/अन्य प्रार्थना कर चुकें तो अगले कदम पर जाएं।

स्तुति: परमेश्वर के लिए स्तुति के गीतों को गाएं और आराधना करें।

जवाबदेही: 4 जवाबदेही प्रश्नों को पूछें:

1. पिछले बार हमारे मिलने के बाद आपने किसे सुसमाचार सुनाया?
2. क्या आपने प्रति दिन बाइबल को पढ़ा/सुना?
3. पिछले बार आपने जो सिखा उसे आपने कैसे पालन किया?
4. प्रार्थना निवेदन/गवाही (ध्यान दें: यदि कोई, कलीसिया को एक समस्या के बारे में बताए, तो उन्हें तुरन्त ही उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करना चाहिए।)

नई शिक्षा:

1.भाग ले सकने वाले बाइबल अध्ययन को करें

पढ़ें या सुनें: प्रेरित 2:42–47

प्रत्येक अनुच्छेद से 4 अध्ययन प्रश्न पूछें और उन्हें उत्तर देने की कोशिश करने दें।

1. यह आपको क्या सिखाता है?
2. आपको क्या नहीं करना चाहिए?
3. आप कैसे सही हो सकते हैं?
4. आप कैसे आज्ञा मानेंगे?

कार्य करें: आपको नई कलीसिया दी गयी है, तो उसे स्वस्थ बनायें। कैसे? एक दूसरे को शिष्य बनाने के द्वारा, एक साथ अराधना करने के द्वारा, संसार में सुसामार सुनाने के द्वारा, आप का सेवा का नमुना यीशु के जैसा हो।

2. याद करें

याद करें: मत्ती 5:42

इस अनुच्छेद से 4 अध्ययन प्रश्नों को पूछें

आदेश कहें:

उदारता से दान दें।

दान एवं दसमांश एकत्र करें: आज से लेकर यह कलीसियाई आराधना का हमेशा का हिस्सा होना चाहिए।

सुसमाचार प्रदान करें: यीशु की कहानी के चार भागों को बताएं।

समापन प्रार्थना : सभा को प्रार्थना के साथ एवं देह को आज्ञा मानने एवं अभ्यास करने के आदेश के साथ समाप्त करें जो उन्होंने सीखा है और उन्हें स्मरण दिलाएं कि वे जाएं और जिन्हें वे जानते हैं या जिनसे वे गांव में मिलते हैं उन्हें बताएं।

सातवीं कलीसियाई सभा– प्रभु भोज लें (कलीसिया)

पौलुस का नमूना पाठ 7

प्रार्थना करें: सभा की शुरूआत प्रार्थना से करें। जब आप और/अन्य प्रार्थना कर चुकें तो अगले कदम पर जाएं।

स्तुति: परमेश्वर के लिए स्तुति के गीतों को गाएं और आराधना करें।

जवाबदेही: 4 जवाबदेही प्रश्नों को पूछें:

1. पिछले बार हमारे मिलने के बाद आपने किसे सुसमाचार सुनाया?
2. क्या आपने प्रति दिन बाइबल को पढ़ा/सुना?
3. पिछले बार आपने जो सिखा उसे आपने कैसे पालन किया?
4. प्रार्थना निवेदन/गवाही – ध्यान दें: यदि कोई, कलीसिया को एक समस्या के बारे में बताए, तो उन्हें तुरन्त ही उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करना चाहिए।

नई शिक्षा:

1.भाग ले सकने वाले बाइबल अध्ययन को करें

पढ़ें या सुनें: 1 कुरि 11:23–32

प्रत्येक अनुच्छेद से 4 अध्ययन प्रश्न पूछें और उन्हें उत्तर देने की कोशिश करने दें।

1. यह आपको क्या सिखाता है?
2. आपको क्या नहीं करना चाहिए?
3. आप कैसे सही हो सकते हैं?
4. आप कैसे आज्ञा मानेंगे?

2. याद करें

याद करें: यूहन्ना 6:35

इस अनुच्छेद से 4 अध्ययन प्रश्नों को पूछें

आदेश कहें:

अपने को जांचें, **प्रभु भोज लें**, और प्रभु को स्मरण करें।

बपतिस्मा लिए विश्वासियों को प्रभु भोज दें: यदि ये अब तक कलीसिया नहीं बन पाया है तो इस समय से लेकर आप हमेशा प्रभु भोज देना आरम्भ करें।

दान एवं दसमांश एकत्र करें: आज से लेकर यह कलीसियाई आराधना का हमेशा का हिस्सा होना चाहिए।

सुसमाचार प्रदान करें: यीशु की कहानी के चार भागों को बताएं।

समापन प्रार्थना : सभा को प्रार्थना के साथ एवं देह को आज्ञा मानने एवं अभ्यास करने के आदेश के साथ समाप्त करें जो उन्होंने सीखा है और उन्हें स्मरण दिलाएं कि वे जाएं और जिन्हें वे जानते हैं या जिनसे वे गांव में मिलते हैं उन्हें बताएं।

अगले कदमो में शिष्यता की निर्देश

अब जब कि आपने कलीसिया को प्रथम कदम पाठ एवं पौलुस के नमूने को सिखा दिये हैं, तो कलीसिया स्वस्थ होने के मार्ग पर चल चुकी है। यदि आप स्मरण करें, एक स्वस्थ कलीसिया को स्वयं नियंत्रित होना चाहिए, जिसका अर्थ है कि इसके पास ऐसे अगुवे होने चाहिए जिन्हें परमेश्वर ने बुलाया है और कलीसिया को अगुवाई करने के लिए बढ़ाए गए हैं। शायद आप या स्थानीय कलीसिया ने पहचान कर लिया है जिन्हें परमेश्वर ने नियुक्त किया है, परन्तु यह संभव है कि स्थानीय अगुवे को अभी भी बढ़ना एवं परिपक्व होना है। जब तक सम्भावित अगुवे परिपक्व न हों और परमेश्वर के वचन को सही तरीके से संभालना न सीखें, तब तक कलीसिया को स्वयं को शिक्षा देना होगा और आराधना एवं बाइबल के अध्ययन के लिए निरंतर मिलना होगा। आपको भी निरंतर कलीसिया का जांच करना चाहिए और देखें कि वे प्रभु में अभी भी बढ़ रहें हैं कि नहीं। अन्त में, याद रखें कि अब तक, एक स्थानीय विश्वासी को जो भी मसीह को ग्रहण करे उन्हें बपतिस्मा देना चाहिए। यदि आप ही सभी को बपतिस्मा दें, तो आप एक स्वस्थ कलीसिया नहीं बना रहें हैं। जो बपतिस्मा दे रहा है वह संभावित अगुवा हो सकता है या केवल एक विश्वासी जो मसीह के बारे में लोगों को बताता है।

अतः पौलुस के नमूने के अंतिम पाठ के बाद, कलीसिया को निम्न बातें करने को कहें:

- उन्हें कहें वे इसी प्रकार मिलते रहें और आराधना का यही नमूना चलाते रहें जो वे अभी तक कर रहें हैं।
- जब वे कलीसिया सभा के **नई शिक्षा** भाग मे आते हैं तो बताए कि उन्हें अगला कदम वचन भाग (पृष्ठ 20-21) का उपयोग करना चाहिए
- उन्हें कहें कि वे किसी को नियुक्त करें ताकि यह सुनिश्चित किया जाए कि प्रभु भोज निरंतर हो।
- उन्हें कहें, यदि वे ऐसा निरंतर नहीं कर रहें हैं, तो वे एक कलीसिया के रूप में जो भी नए मसीह को स्वीकार कर रहे हैं उन्हें बपतिस्मा देना शुरू करें।
- उन्हें कहें कि उन्हें दो विश्वासयोग्य विश्वासी को चुन लेना चाहिए जो दान का एकत्र करें, गिने, और संपूर्ण कलीसिया को बताएं जिन्होंने दान दिया है।
- उन्हें कहें कि एक कलीसियाई देह के तौर पर वे परमेश्वर से मांगें और तब निर्णय करें कि दान के साथ क्या करना है उसके बारे बाइबल क्या कहती है। उन्हें कहें कि इसका उपयोग बाइबल के कथन के अनुसार ही होना चाहिए।

याद रखें कि आपका लक्ष्य है कि स्वस्थ बढ़ने वाली कलीसियाओं का स्थापना करें। इसका अर्थ है कि आप हमेशा ऐसे विश्वासी की खोज में रहेंगे जो आज्ञाकारी हैं और जो रिक्त स्थानों में जाकर फिर से आरम्भ करेंगे और जिन्हें आप सम्पूण प्रक्रिया सिखा सकें। जब आप आज्ञाकारी शिश्य पाऐंगे तो आपने जो कुछ सीखा है वह सब उन्हें सिखाएं।

अगले कदमो में शिष्यता का वचन संग्रह

रु	शास्त्रभाग संख्या	कहानी/विषय
1	लूका 5:1–11	मनुष्यों का मछुआरा/मसीह के पीछे चलना
2	यूहन्ना 15:1–11	दाखलता एवं डाली/ मसीह में बने रहना
3	भजन 119:1–16	परमेश्वर के वचन पर ध्यान लगाना
4	लूका 11:1.13 – लूका 18:1.8	प्रार्थना
5	लूका 17:11–19	कोढ़ी का चंगाई/आराधना
6	यूहन्ना 4:3–42	कूंए में स्त्री/ आराधना
7	मत्ती 3:1–17	यहून्ना बपतिस्मा देने वाला/ पवित्र
8	यूहन्ना 14:16–17, यूहन्ना 16:5–15	पवित्र आत्मा की भूमिका
9	उत्प 1–2	सृष्टि
10	उत्प 3	पाप
11	प्रेरित 2:37–47	संगति
12	कुलु 1:1–.23	यीशु
13	फिलिपि 2:3–11	सेवा/यीशु
14	निर्ग 20:1–17	10 आज्ञा
15	1 कुरि 15:1–19	यीशु का पुनरूत्थान
16	1 थिस्स 4:13–5:11	हमारा पुनरूत्थान
17	यूहन्ना 14:1–15	स्वर्ग और यीशु परमेश्वर है
18	लूका 7:36–50	क्षमा
19	लूका 10:25–37	महान आज्ञा
20	मत्ती 18:21–35	दूसरों को क्षमा करना
21	लूका 8:4–15	सुसमाचार प्रचार/ बीज बोने वाले का दृश्टांत
22	लूका 15	टनुग्रह
23	लूका 17:1–10	दूसरों को पाप कराना
24	लूका 1:26–38, लूका 2:1–20	यीशु का जन्म
25	इफि 2:1–10	धर्मी ठहराया जाना
26	गला 5:16–25	आत्मा के फल
27	1 कुरि 12:1–13	आत्मिक वरदान
28	1 कुरि 12:14–31	एकता / कलीसिया
29	1 कुरि 13	प्रेम
30	इब्रा 11	भरोसा
31	रोमि 4	विश्वास
32	यूहन्ना 13:1–20	सेवा
33	प्रेरित 4:1–31	सुसमाचार प्रचार

अगले कदमो में शिष्यता का वचन संग्रह

34	मत्ती 25:31–46	न्याय
35	लूका 12:15–34	लालच / लालच
36	लूका 14:25–35	शिश्यत्व / कीमत गिनना
37	मरकूस 7:14–23	अंदरूनी शुद्धता
38	1 राजा18:20–40	मूर्ति कमजोर है
39	मत्ती 5:21–48	सम्बंध
40	मत्ती 6:1–24	वास्तविक धर्म
41	दानिएल 6	सताव के द्वारा आज्ञाकारिता
42	भजन 23	प्रभु से संतावना
43	मत्ती 24:42–25:13	द्वितीय आगमन वाले विश्वासी
44	यूहन्ना 3:1–21	नया जन्म
45	यूहन्ना 5:18–30	यीशु ही परमेश्वर है / पुनरूत्थान
46	लूका 8:26–39	यीशु का दुश्टात्मओं के उपर सामर्थ्य
47	लूका 8:22–25	यीशु का प्रकृति के उपर सामर्थ्य
48	मत्ती 14:13–21	यीशु जरूरत को पूरा करता है
49	मत्ती 14:22–36	यीशु आश्चर्यकर्म कर सकता सकता है
50	मत्ती 16:13–28	यीशु कौन है
51	प्रेरित 5:1–11	परमेश्वर से झूठ न बोलें
52	प्रेरित 17:16–34	पौलुस एथेन्स में
53	प्रेरित 19:11–20	यदि आप यीशु को नहीं जानते हैं
54	1 तिमू 3:1–15	अध्यक्ष एवं डीकन
55	याकूब 2:1–13	दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करें
56	याकूब 3:1–12	जीभ
57	1 यूहन्ना 1:5–2:6	पाप एवं ज्योतिः अंधकार
58	1 यूहन्ना 4	आत्माओं / प्रेम को पहचानना
59	प्रकाशित 20:11–21:8	अंतिम समय
60	1 थिस्स 4:1–12	पवित्रिकरण

लम्बे अवधी की शिष्यता

प्राचीन और अगुवे के बाद, जो 1तिमु 3 के योग्यता को प्राप्त करें उन्हें कलीसिया में न्युक्त करें, कई बाते हैं जो नये अगुवे और विश्वासियों को जानने की जरुरत है। आज्ञाकारिता और मसीह में उन्नति जीवन भर की प्रक्रिया है। कलीसिया के गुनात्मक वृद्धि और अगुवे का विकास और स्वस्थ कलीसिया और उन्नति के लिए रॉड(RAD) अगुवों का समुह और प्रशिक्षण संसाधन आप के सहायता के लिए उपलब्ध है।

एपेन्डिक्स ए– अतिरिक्त बपतिस्मा पाठ 1

यह अध्ययन उनके साथ की जा सकती है जिन्होंने सुसमाचार को आनन्द के साथ ग्रहण किया है, परन्तु जो बपतिस्मा के बारे में सीखने के बाद, अब भी बपतिस्मा लेने के लिए तैयार या इच्छुक नहीं हैं।

1. **पढ़ें और विचार करें**: मत्ती 13:1–9 और मत्ती 13:18–23
   पूछें: आप कैसा मिट्टी बनना चाहते हैं?

2. **पढ़ें और विचार करें:** लूका 14:25–33, मत्ती 10:32–39, रोमियो 10:9
   प्रमुख बिन्दु–
   - यीशु समूचे संसार में उद्धार लाने के लिए आया
   - कुछ लोग उसके उद्धार को ग्रहण नहीं करेंगे और आपको उसके पीछे चलने के कारण सताएगें।
   - जबकि हमारा उद्धार केवल यीशु पर विश्वास एवं भरोसे पर टिका है, हम प्रदर्शन करते हैं कि वह सचमूच हमारा प्रभु है उसे प्रथम रखकर। उसका आदेश हर बात से पहले आना चाहिए। इसलिए यीशु ने कहा अपने शिश्यों से कि पहले कीमत जान लो।

   पूछें: क्या आप यीशु की आज्ञा को मानेंग? वह उद्धार का एकमात्र मार्ग है। परमेश्वर आपको एक चुनाव दे रहा है। क्या आप यीशु के पीछे चलेंगे या नहीं?

3. **पढ़े एवं विचार करें:** मत्ती 28:18–20 और मत्ती 3:13–17
   पूछें
   - मत्ती 28:18–20 में यीशु ने हमें क्या आज्ञा दिया है? यदि हम उसके शिश्य हैं, हमें यीशु की आज्ञा माननी है?
   - मत्ती 3:13–17, यीशु का उदाहरण क्या था? यदि हम उसके शिश्य हैं, क्या हमें यीशु का उदाहरण मानना चाहिए?

4. **पढ़ें एवं विचार करें:** रोमियो 6:3–8
   मुख्य बिन्दु:
   - जल के अन्दर जाने का अर्थ यीशु का मृत्यू। यीशु के समान जैसे वह आपके पापों के लिए मरा वैसे आपका पुराना स्वभाव एवं पाप की प्रवृति मर गया।
   - पानी से बाहर निकलने का अर्थ यीशु का पुनरुथान। जैसा यीशु को नया जीवन मिला, जब आप ने विश्वास किया तव यीशु के द्वारा नया जीवन भी मिला।

पूछें: अब जबकि आप जान गए हैं कि पानी के बपतिस्मे का अर्थ क्या है और यह एक आदेश है और यह यीशु का उदाहरण है, तो क्या आप इसे लेंगे? पानी का बपतिस्मा यह चिन्ह है कि आपने वास्तव में उद्धार पा लिया है और आप वास्तव में सारा जीवन यीशु के पीछे चलेंगे। आप क्या करेंगे?

एपेन्डिक्स ए– अतिरिक्त बपतिस्मा पाठ 2

यह अध्ययन उनके साथ किया जा सकता है जो प्रथम अतिरिक्त बपतिस्मा पाठ के बाद भी बपतिस्मा लेने के लिए तैयार नहीं हैं।

पूछें: आपको बाइबल से कितनी बार यीशु के आज्ञा एवं उदाहरण को देखने की जरूरत है इससे पहले कि आप इसका पालन करें? आशा करें कि उत्तर एक बार होगा!

पढ़ें और विचार करें: प्रेरितों के काम से निम्न अनुच्छेद। प्रत्येक अनुच्छेद को पढ़ने के बाद निम्न प्रश्न पूछें:

1. नए विश्वासियों ने पानी का बपतिस्मा कब लिया?

2. किसने बपतिस्मा लिया? लोगों की संख्या, लिंग और उनके पूर्व जीवन के चुनावों और उनके वर्तमान स्थिति पर ध्यान दें।

3. जब सारे अनुच्छेद पर विचार कर लिया जाए, उसी प्रश्न के साथ अंत करें जो हनन्याह ने पौलुस से पूछा प्रेरित 22:16 में, ''अब देर किस बात की?''

शास्त्रभाग	व्यक्ति जिनका बपतिस्मा हुआ
प्रेरित 2:41	एक दिन में 3000
प्रेरित 8:6–13	दु"टात्मा ग्रसित/जादूगर/ बीमार
प्रेरित 8:36–38	मार्ग पर खोजा
प्रेरित 9:18–19	मसीहियों के हत्यारे एवं सताने वाले
प्रेरित 10:47–48	अन्यजाति– गैरयहूदी लोग
प्रेरित 16:13–15	नदी की स्त्री
प्रेरित 16:33	एक रोमी सुबेदार
प्रेरित 18:8	धार्मिक अगुवा– सिनागोग/ मंदिर का याजक
प्रेरित 19:1–5	वे जिन्होंने यीशु के नाम के अलावे किसी और नाम से बपतिस्मा लिया था।
प्रेरित 22:14–17	मसीहियों का हत्यारा ''तू इन्तजार क्यों कर रहा है?''

From Tree of Life - Used with Permission

एपेन्डिक्स–बी कलीसिया रोपकों के लिए दान की शिक्षा

जिम्मेवारी के साथ दान करना स्वथ्य कलीसिया के प्रतिको मे से एक हैं। जैसे हम लोग नए विश्वासियों को स्वथ्य कलीसिया बनने के लिए शिक्षा देते हैं तो उन्हें दान देने के विषय मे सिखाना चाहिए। जबकि पौलुस की पद्धति में दान की शिक्षा आखिरी पाठ मे रखा गया है। कई कलीसिया रोपक दान की शिक्षा विषय को समझने मे संघर्ष करते हैं, और दान की शिक्षा को छोड़ देते हैं। इस समस्यसा से उबरने के लिए यह पाठ तैयार किया गया है।

कहें: यह पाठ चार सवालों का जबाब देने की कोशिश करना है। **क्यों देना है ? हमें कैसे देना है ? हमें**
कितना देना है ? और दिए गए पैसे को कलीसिया कैसे इस्तेमाल करे ?

व्याख्या करें कि ये अध्ययन किसके बारे मे है, तब "क्यो देना है ?" को काली या सफेद पट्टी पर लिख कर बताएं।

कहें: बाईबल हम लोंगों को दान देने के विषय मे कई कारण बताती है, और सभी अच्छे कारण हैं, कुछ कारण दूसरे से अच्छे हैं। आइये मिलकर दान देने के विषय मे जो कारण बाईबल मे दिए गए हैं उसे देखें। अपने कागज पर बड़ा त्रिभुज बनाएं और छः भागों मे बांटे।

त्रिभुज के नीचे दिए गए वचनो के प्रत्येक पांती पढ़ते हुए शरू करें और विचार विमर्श करें। दिए गए पांती के लिए कारण लिखे। "जैसे दोगे तो वैसे प्राप्त करोगे" की शिक्षा को सुनिश्चित करें, पाने की आपेक्षा से देने का कारण भी दैनिय है (लेने से देना भला है)। इस स्तर से ऊपर आना सामान्य तौर पर आज्ञाकारी होना अच्छा है। परन्तु उत्तम भी है। आप धन्यवादी हैं, ये उत्तम कारण है, इसलिए कि आप परमेश्वर के राज्य को फैलते हुए देखना चाहते हैं ये आपका दर्शन है, या इसलिए उत्तम है क्योंकि आप अपने पड़ोसियों से अपने समान प्रेम करते हैं। यदि आप भुख से पिड़ित हैं तो आप अपने लिए भोजन वस्तु खरीदेगें। यदि आप के पास कपड़े नही हैं, तो आप कुछ खरीदेंगे। यदि आपके पास ठहरने के स्थान न हो, तो आप अपने लिए खरीदेंगे। यदि आप ये सब अपने लिए करते हैं, तो प्रेम कहता है कि आप अपने पड़ोसियों के लिए ऐसा कीजिए।

क्यों दान देना है? बाईबलीय कारण

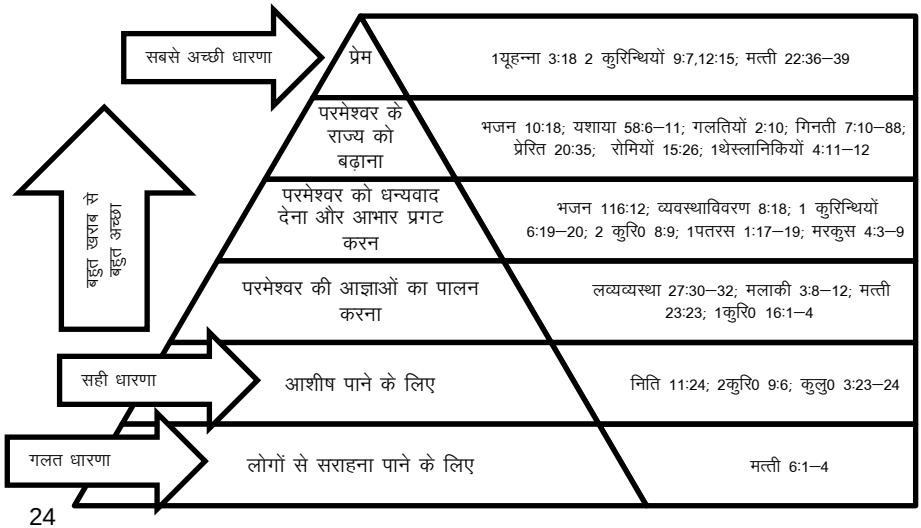

कहें: हमे कैसे देना चाहिए? इस विषय मे बाइबल क्या कह रही है उसे देखे। हमे कितना देना चाहिए? और कलीसिया को क्या करना दिए गए पैसे के साथ?

इस विन्दु पर निचे दिए गए आयतों को दुढें और समुह मे विचार विमर्श करें। इसे छोटे समूहों मे किया जा सकता है, जो अपने विचारों का रिपोर्ट प्रस्तुत कर सके या एक बड़ी समूह के विचार विर्मश मे प्रस्तुत करें।

(टिप्पणीः शिक्षा देने से पहले आप खण्ड का पुनः वृति करें ताकि सुनिश्ति हों कि विचार विर्मश की अगुआई ठीक से कर सकें) पौलुस प्रेरित द्वारा दिए गए स्वस्थ कलीसिया मे 'दान' देने के कुछ नियमों पर सावधानीपुर्वक ध्यान दें और याद रखें स्वस्थ कलीसिया ही हमारा लक्ष्य है।

कैसे?

- मत्ती 6:1–4– गुप्त मे
- मत्ती 6:19–21, 24– सही हृदय के साथ (पृथ्वी मे धन इक्ठा न करें, इसके बदले स्वर्ग मे धन मिलेगा)
- लूका 12: 16–21 –खराई के साथ और अच्छे काम का आचरण
- 2 कुरि. 8:1–5; 9:6–7– स्वतंत्रता से और आनंन्दपुर्वक
- निति. 30: 7–9– बुद्धि के साथ– आवश्यकभर ही आपेक्षा करें

कितना?

- लैव्य. 27:30–32– न्यून्तम 10% यह परमेशवर का आधारभूत आज्ञा है।
- मर. 12:41–44– 100% दान करने का उदाहरण
- लूका 18:22–27; मत्ती 19:21; लूका 14:33 –संपुर्ण दान करने का उदाहरण
- प्रेरित 2:44–47– आप सुनिश्चित हों, कि ऐसी कोई आवश्यकता नहीं जिसकी पुर्ति न हुई हों
- प्रेरित 4:34–37– उदारतापुर्वक दान देना
- प्रेरित 9:36 –उदारतापुर्वक दान देना (नया नियम मे 10% से ज्यादा देने की शिक्षा स्वीकृत है)

दान का इस्तेमाल कैसे होना चाहिए?

- स्थानिय कलीसिया निर्णय करेगी(स्वयं शासन और स्वयं सहायता)
- लूका 12:42; 16: 10–13– उत्तरदायित्व के साथ
- मत्ती 25:25–40; प्रेरित 4:34–35; 2:44; रोमियों 15:26; गलातियों 2:10; याकूब 2:15–16 गरीब, भूखे, बेघर, विधवा, और अनाथों की जरूरतों को पूरा करने के द्वारा परमेश्वर के रज्य को फैलाना (नियम नीचेः)
- 2 थिस्लोनिकियों 3:6–15 –यदि कोई कर सकता है? तो वो क्रम करे। यदि कोई काम न करे तो खाने भी न पाए। यदि उनके पास प्रतिभा न हों, तो कलीसिया उनको काम पर रखे, यदि सब काम करने के योग्य हों, तो सभी काम करें।
- 1 तिमुथियुस 5:3–16– यदि परिवार के लोग विधवाओं (अनाथों या अपंगों), की देखभाल कर सकते हैं, तो उन्हें देखरेख करने की शिक्षा देना चाहिए। यदि विधवा जवान हों, तो उनको शादी करके काम करना चाहिए।सिर्फ वास्तविक आवश्यकता ही की पुर्ति की जाए।
- मत्ती 6:25–34– वास्तविक आवश्यकता को ही पुरा करें– भोजन, कपड़ा (हो सकता है घर भी)
- कलीसिया रोपन के द्वारा परमेश्वर के राज्य को बढ़ाना (विचार जो बईबल मे से भी हो, कलीसिया रोपको या देखरेखकर्ताओं को मदद करना, कार्यकर्ताओं के लिए साइकिल, प्रशिक्षण इत्यादि)

एपेन्डिक्स–सी प्रभु–भोज

प्रभु–भोज क्या है? विश्वासी होने के नाते हमारे लिए क्या महत्व रखता है?

आएं परमेश्वर के वचनों मे देखे कि प्रभु भोज के विषय मे हमे क्या कहता है।

मत्ती 26:26–29; मरकुस 14:22–24; लूका 22:17–20; 1कुरि0 11:23–29

प्रभु–भोज क्या है? इस बात को पाने के लिए, आएं इन सवालों को पुछें –

1. **क्या?**

   अ. रोटी– यह मसीह के देह को प्रगट करता है, जो हमारे लिए तोड़ा गया – उसका देह।

   (मत्ती 26:26; मरकुस 14:22; लूका 22:19; 1कुरि0 11:24)

   ब. रस का कटोरा– मसीह के लोहू को प्रगट करता है, जो बहुतों के लिए बहाया गया।

   (मत्ती 26:28; मरकुस 14:24; लूका 22:20; 1कुरि0 11:25)

   1. यह मसीह का वास्तविक देह और लोहू नहीं है, परन्तु यह मसीह की उस देह का वह तस्वीर है, जो प्रेम के खातिर हमारे लिए तोड़ा गय, और हमारे पापों की कीमत को चुकाने लिए क्रुस पर से लोहू बहाया गया।
   2. हम यह भी चाहते हैं कि कहीं भी कलीसिया मे यह पुणः उत्पादित हो सके। अंगुर का ही रस लेने की शिक्षा गलत है। जो कुछ वे स्तेमाल कर सकते हैं वे वैसा करें, बताइये कि चीजें उतनी महत्व की नहीं जितना की कैसे उपयोग किया जा रहा है।

2. **कहाँ?**

   प्रभू–भोज कहाँ लिया जा सकता है? कहीं भी, जहाँ कलीसिया मिलती है।

   पुछें – क्या यह केवल प्रमुख कलीसिया मे ही लिया जा सकता है? कभी–कभी छोटी कलीसिया जो घर मे मिलती है, लेकिन प्रभु भोज के लिए प्रमुख कलीसिया मे आते है। हम लोग चाहते हैं कि छोटी कलीसिया विश्वास करें वे बडी कलीसिया जैसे ही हैं।

3. **कब?**

   कब इसे लिया जा सकता। कभी भी; कलीसिया के लोगों पर निर्भर करता है, जब वे लोग चाहते है, लेकिन कलीसिया द्वारा लगातार और सामूहीक रूप मे लेना चाहिए, जैसा भी हो जल्दी– जल्दी नहीं ताकि यह एक रिती बन जाए या आदत बन कर रह जए जिसमे प्रभु–भोज का अर्थ न रह जाता हो, और न ही इतना अंतराल पर लेना चाहिए कि हम भुल जाएं।

4. **हम प्रभु–भोज क्यों लेते लेते है?**

   क. उदधोषणा– (1कुरि0 11:26) प्रभु भोज लेने के द्वारा आप प्रभु की मृत्यु को उसके आने तक प्रचार करते हैं। प्रभु का मृत्यु की उदधेषणा मे, आप स्वीकार करते है कि वो अपके और संसार के पापों के खातीर मरे।

   ख. धन्यवाद करना– यीशु ने रोटी और कटोरा लेने से पहले धन्यवाद दिया। हमे उस उद्धार के लिए परपेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए जो उसने हमे दिया। **(मत्ती 26:26–27; मरकूस 14:22–23; लूका 22:17,19; 1कुरि0 11:24)**

   ग. स्मरण के लिए– यीशु ने कहा,"मेरे स्मरण के लिए यही किया करो"। आपने आप को बलिदान करने के द्वारा हमारे पापों के सजा को उन्होंने अपने उपर ले लिया, हम विश्वासी होने के नाते उसके स्मरण के लिए प्रभु भोज लेते हैं। जैसे हम अपने जन्मदिन, शादी की सालगिरा, छुट्टियॉ इत्यदि साल मे एक बार याद करते या मनाते हैं, इससे बढ़कार यीशु ने हमे उद्धार, जो एक बड़ा चीज है हमे दी है, उसे कितना ज्यादा याद करना चाहिए?

   (लूका 22:19; 1कुरि0 11:24–25)

   घ. नई वाचा– ये नई वाचा का एक चिन्ह है, जो परमेश्वर ने अपने और अपने लोगों के साथ बॉधा। इस नई वाचा ने पुराने की जगह ले ली, जिसमे यीशु पापों के लिए एक मात्र बलिदान बनें। उसी प्रकार से नए विश्वासी एक सच्चे परमेश्वर के साथ पूर्ण रूप से नई वाचा मे प्रवेश कर लिए हैं। वे अपने पापमय रास्तों को छोड दिए हैं, और मानते है कि यीशु ने सबके पापों के लिए एक बार सजा को उठा लिया। (लूका 22:20; 1कुरि0 11:25)

ङ• प्रभु की आज्ञा– "इसे करें.....''यीशु मसीह हमे प्रभु भोज करने के लिए जीवित रहते यह कहकर गए कि, मेरे स्मरण के लिए यही किया करो। यह एक स्वथ्य कलीसिया के लिए एक कार्या है–यीशु ने जो कलीसिया के लिए किया उसे स्मरण करना मसीह की देह के लिए महत्वपूर्ण है, जो मसीह की देह मे एकता को लाता है। एक स्वथ्य कलीसिया को बनाए रखने के लिए यह कई कार्यो मे से एक है। **(लूका 22:19; 1कुरि0 11:24–25)**

5. **कैसे?**

प्रभु–भोज लेने के दस कदम

1. **प्रार्थना**– जब कभी भी आप कलीसिया इक्टठे होते हैं तो प्रार्थना के साथ शुरू करें। (मत्ती 26:26,27; मरकूस 14:22,23; लूका 22:17,19; 1कुरि0 11:24)
2. **शिक्षा/उपदेश**– अगुवा को प्रभु–भोज के सम्बन्ध मे शिक्षा देनी चाहिए, विशेषेकर जब यह पहली बार लिया जा रहा हो। हो सकता है कि नए विश्वासी पहली बार ले रहें हों, कलीसिया मे प्रभु–भोज की शिक्षा बार– बार दूहराना बुरा नही होता।
3. **स्मरण के लिए–** एक समूह के रूप मे याद करना जो यीशु ने सबके लिए किया।
4. **उदघोषणा**– यीशु के दोबारा आगमन तक उसके मृत्यु का प्रचार करना।
5. **धन्यवाद देना**– परमेश्वर को धन्यवाद दे उस अवसर के 'स्मरण के लिए' जो उसने हमे दिया है।
6. **जॉचना/पश्चताप** – अपने आप को जॉचने के लिए थोड़ा समय लें, यदि आपके अंदर कोई पाप हो तो परमेश्वर के समने पश्चताप करें। (1कुरि0 11:28)
7. **रोटी–** रोटी को लें और उसे तोड़े, तब इसे आगे बढ़ाएं और मसीह के तोड़ी गई देह को प्रतिक रूप मे लेने दें। जब सब के पास ये टूकड़ा पहुॅचे, तब एक साथ लें। (मत्ती 26:26 मरकूस 14:22; लूका 22:19; 1कुरि0 11:24)
8. **कटोरा/रस**– एक बड़ा कटोरा/रस रखने का पात्र और दूसरे की ओर बढ़ा दे, ताकि वे एक कटोरा से लेकर अपने कटोरा मे डाल सकें। जब सभी लोग रस को ले चूकें, तब एक साथ पियें। आप सभी एक ही कटोरा से ले रहे हैं, परन्तु आपके अपने कटोरे मे।**(लूका 22:17)**
9. **गीत**– एक साथ मिलकर परमेश्वर के बढ़ाई की गीत गायें। **(मत्ती 26:30; मरकूस 14:26)**
10. **प्रार्थना–** अंत मे प्रार्थना करें।

6. **कौन?**

क. कौन ले सकता है– बपतिस्मा लिए हुए विश्वासी लोग। (यदि इसमे कोई दुविधा है तो, बताएं की प्रभु भोज क्या है– उदघोषणा।) अविश्वासी उसका उदघोषणा नही करेगा। जब आपने बपतिस्मा लिया है तो, उसकी उदघोषणा करें कि यीशु ही प्रभु है, तब आप प्रभु–भोज लेने के लिए सक्ष्म हैं।

ख. कौन दे सकता है– बपतिस्मा लिए हुए विश्वासी लोग।

7. प्रभु–भोज क्या नही है?

1. **रिवाज**– यद्यपि लगातार प्रभु–भोज का लेना महत्वपूर्ण है, हमे सावधान होना है कि यूंही ले लेने के द्वारा रिवाज मे न बदलें। अभी भी नए विश्वासी का जुड़ाव रिवाज आधारित धर्म से है। कलीसिया के अगुवे होने के नाते हमे नई कलीसिया को वचन के द्वारा सही तरीके से सिखना है, इसे शुरू से ही अभ्यास करना है कि प्रभु–भोज क्या है और इसे कैसे करना चाहिए।
2. **साधारण विचार–** इसे हलके रूप मे नही लेना चाहिए। हमे सावधान किया गया है कि प्रभु भोग को अनुचित रीति से नही लें, या प्रभु के देह और लोहु के विरोध पाप के दोषी होते हैं। हम अपने आप को जॉचे, यदि कोई हों तो स्वीकारें और रोटी और रस लेने से पहले क्षमा मांगे। यदि आपाको किसी से माफी मांगने की जरूरत हो, तो प्रभु–भोज लेने से पहले माफी मांग लें और तब प्रभु–भोज लें। यदि आपका रिशता परमेश्वर से ठीक न हों तो इस समय आपका प्रभु–भोज लेना ठीक नही होगा।

समस्याएं

लोगों के बीच मे प्रभु–भोज को नही लेने की कुछ विवाद चली आ रही है क्योंकि यह उसके परिवार या पड़ोसियों मे परेशानी ला देगी। याद रखें, यीशु के पीछे चलना आसान नही है, और मसीह के पीछे चलने से सताव आएंगी। अध्ययन और वार्तालाप के लिए **यूहना 6:51–71**, अच्छा होगा।

परमेश्वर के राज्य उन्नति के चार खेत
मरकुस 4:26–29

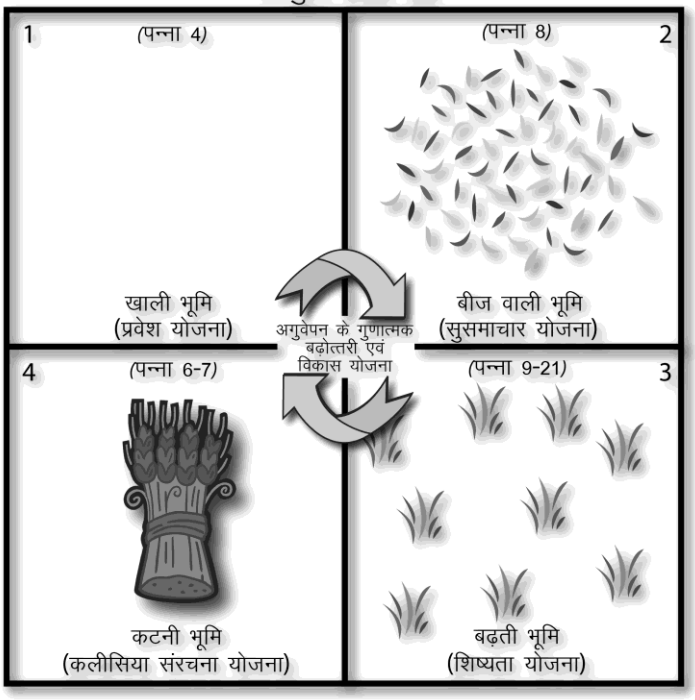

जाओ और बताओ

1. _____
2. _____
3. _____
4. _____
5. _____
6. _____
7. _____
8. _____
9. _____
10. _____
11. _____
12. _____